International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

पौराणिक कथाओं में वर्णित शिव की सौम्य प्रतिमाएँ : एक अनुशीलन

डॉ0 प्रदीप सिंह

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

हिन्दू धर्म के प्रमुख देवताओं में शिव संहारक के रूप में स्वीकृत हैं। परन्तु शैव परम्परानुयायी उन्हें सृष्टिकर्ता भी मानते हैं वे उन्हें सर्वोच्च देवता के रूप में स्वीकार करते हैं। शिव का व्यक्तित्व बहुपक्षीय है। एक ओर वह अपने भक्तों के लिए कृपालु और अनुग्रहदाता हैं, तो दूसरी तरफ सृष्टि के विनाश हेतु ताण्डव नृत्य कर्ता भी है। शिव को संगीत नृत्य और योग का प्रणेता भी माना जाता है, पशुपति के रूप में वे समस्त प्राणियों के स्वामी है, वे महेश्वर व महादेव हैं एवं शक्ति के प्रतीक उमा के पति हैं।[1] शिव के शताधिक नाम हैं, जिनके विश्लेषण से उनके व्यक्तित्व के विविध पक्ष स्पष्ट हो जाते हैं। ऋग्वेद में रूद्र आकाश में चमकने वाली बिजली एवं वर्षा के देवता है।[2] वे जटाधारी तथा धनुषधारी हैं, मनुष्यों एवं पशुओं के संहार में सामर्थ्य हैं।[3] शिव के इस रौद्र रूप के अतिरिक्त उनके चरित्र का सौम्य पक्ष भी है।[4]

पौराणिक कथाओं से सम्बद्ध शिव की सौम्य रूप प्रतिमा के अन्तर्गत उनकी कथा के आधार पर शिव के अनुग्रह भाव को प्रदर्शित किया गया है तथा इन प्रतिमाओं में शिव को किसी न किसी के ऊपर अपना अनुग्रह भाव दिखलाया है। शिव की सौम्य रूप प्रतिमाओं के अन्तर्गत निम्न प्रतिमाओं की गणना की जाती है।

1. चण्डेशानुग्रह–प्रतिमा

इस प्रतिमा से सम्बन्धित जो कथा है वह इस प्रकार है–चोल देश में एक ब्राह्मण पुत्र का नाम ''विचारशर्मन'' था जो नित्य गायों को चराने ले जाया करता था। गायों को चराते समय वह बालक बालू का शिवलिंग बनाकर गायों से दूध दूहकर चढ़ा देता था, फलतः घर पर गायें कम दूध देती थी। इसकी सूचना जब उसके पिता को मिली तब उसके पिता ने बालू के शिवलिंग को पैर से मारकर गिरा दिया जिस पर क्रोधित होकर विचारशर्मन ने कुल्हाड़ी से अपने पिता का पैर काट दिया। अपने भक्त की अपने प्रति असीम श्रद्धा को देखकर भगवान शिव वहाँ प्रकट हुए और विचारशर्मन को अपने गणों का प्रमुख बना दिया। साथ–साथ उसे अमरत्व का वरदान भी दिया। इस कथा के आधार पर जो प्रतिमा निर्मित की जाती है, उसे चण्डेशानुग्रह प्रतिमा कहा जाता है और पद्मासन में ध्यानमग्न बालक विचारशर्मन की आकृति बनायी जाती है। गंगैकोण्डचोलपुरम् में शिव द्वारा विचारशर्मन पर अनुकम्पा करने की कथा का सुन्दर चित्रण किया गया है।[5] इसमें शिव को सुखासन मुद्रा में तथा भक्त को घुटने के बल बैठे हुये अंजलि मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। पार्श्व में स्थित पार्वती उत्कूटिकासन मुद्रा में अंकित है, जिसका हाथ अभय मुद्रा में है। प्रतिमा अतीव कलात्मक एवं प्रभावशाली है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

2. विष्णवानुग्रह प्रतिमा

इस प्रतिमा के निर्माण की जो कथा है, उसके अनुसार एक दैत्य को मारने में अपने को असमर्थ पाकर विष्णु ने भगवान शिव की पूजा करनी प्रारम्भ की वे नित्य शिवलिंग पर एक सहस्त्र कमल पुष्पों का अर्पण करते थे। एक दिन पूजा करते समय एक कमलपुष्प की कमी हो गयी, फलतः उस समय विष्णु ने कमल पुष्प के स्थान पर अपनी एक आँख को निकालकर शिवलिंग पर अर्पित कर दिया, विष्णु की इस पूजा से प्रसन्न होकर शिव ने विष्णु को दर्शन दिया और उन्हें एक चक्र प्रदान किया जिससे विष्णु ने उस दैत्य का वध किया। इस कथा के आधार पर ही विष्णवानुग्रह प्रतिमा का निर्माण किया जाता है, इस प्रतिमा में चतुर्भुजी विष्णु को अंजलि मुद्रा में तथा एक हाथ में कमलपुष्प और एक हाथ में आँख लिए हुए शिव का अर्चन करते हुए प्रदर्शित किया जाता है। शिव को चतुर्भुजी रूप में हाथ में चक्र लिये हुए दिखाया जाता है, इस प्रतिमा का सुन्दर निदर्शन कांजीवरम् और मदुरा में किया गया है।[6]

किरातार्जुन प्रतिमा

इस प्रतिमा निर्माण के आधार के रूप में जो कथा है, वह इस प्रकार हैं, अर्जुन शिव से पाशुपत अस्त्र प्राप्त करना चाहते थे, अतः अर्जुन ने हिमालय की उपत्यका में जाकर शिव की घोर उपासना की ठीक उसी समय शिव किरात (जंगली जाति) के रूप में प्रकट हो गये और सामने जाते हुए वराह पर अर्जुन और किरात ने एक साथ प्रहार किया तदन्तर मृत वराह पर अधिकार स्थापन हेतु युद्ध हुआ और अर्जुन घायल हो गये तब उन्होंने अद्भुत शक्तिशाली शिव को पहचान लिया और पैरों पर गिर गये, शिव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्रदान कर दिया।[7] इस कथा के आधार पर निर्मित की जाने वाली प्रतिमा में अंजलिबद्ध मुद्रा में अर्जुन तथा किरातवेश में पाशुपत अस्त्र देते हुए शिव की आकृति निर्मित की जाती है, पाषाण निर्मित अत्यन्त सुन्दर किरातार्जुन प्रतिमा तिरूच्छन्नगत्तनर्गुड में दृष्टव्य है।[8] ग्यारहवीं और बारहवीं शती० ई० की तंजौर के राधानरसिंहपुरम की कांस्य निर्मित शिव की किरातार्जुन प्रतिमा में पद्य पर स्थित शिव को त्रिभंग मुद्रा में अतीव कलात्मक ढंग से प्रदर्शित किया गया है।[9]

3. लिंगोद्भव प्रतिमा

यह दक्षिण भारत की अत्यन्त लोकप्रिय प्रतिमा है। इस प्रतिमा से सम्बन्धित कथा का उल्लेख अनेक पुराणों में किया गया है, जो इस प्रकार है. एक बार विष्णु क्षीरसागर में शयन कर रहे थे, उसी समय एक प्रकाश पुंज दिखायी पड़ा जिससे ब्रह्मा उद्भूत हुए, ब्रह्मा ने विष्णु से पूछा तुम कौन हो विष्णु ने उत्तर दिया मैं सृष्टि का निर्माता हूँ, इस पर ब्रह्मा क्रोधित होकर बोले कि इस सृष्टि का वास्तविक निर्माता तो मैं हूँ, दोनों में यह विवाद अभी चल ही रहा था उसी समय दोनों के सामने एक विशाल प्रकाशमान लिंग उद्भूत हुआ, जिससे सहस्त्रों ज्वालायें प्रस्फुटित हो रही थी। विष्णु ने वराह रूप धारण कर उस लिंग का निचला सिरा तथा ब्रह्मा ने हँस रूप धारण कर उसका ऊपरी सिरा ढूंढने के लिए चल पड़े किन्तु दोनों ही असफल रहे। अन्त में हारकर दोनों ने इस लिंग की उपासना प्रारम्भ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कर दी। उसी समय धनुष लिए हुए गज चर्मधारी शिव प्रकट हुए और कहा कि वास्तव में हम तीनो एक ही हैं किन्तु आवश्यकता वश हमारे तीन रूप है। शिव पुराण में तीनों ही शक्तियों की एकरूपता का उल्लेख किया गया है।[10] शिव की लिंगोद्भव प्रतिमा के अन्तर्गत शिव को आकृति घुटने के नीचे नहीं बनायी जाती है और दाहिनी ओर ब्रह्मा के प्रतीक के रूप में हंस और विष्णु के प्रतीक रूप में वराह को प्रदर्शित किया जाता है। जीतेन्द्र नाथ बनर्जी ने तंजौर से प्राप्त लिंगोद्भव प्रतिमा का उल्लेख किया है।[11]

4. गंगाधर प्रतिमा

इस प्रतिमा निर्माण के आधार स्परूप जो कथा है, वह इस प्रकार है, एक बार ''राजा सागर'' के दस सहस्त्र पुत्रों को 'महर्षि कपिल' ने अपने श्राप से भस्मीभूत कर दिया था, पुन प्रायश्चित के रूप में उन्होंने यह वरदान दिया कि वे गंगा के जल स्पर्श से पुनः जीवित हो सकते हैं। कालान्तर में राजा सागर के वंशज ''भगीरथ'' ने ब्रह्मा की उपासना कर गंगा को पृथ्वी पर लाने का वरदान प्राप्त कर लिया किन्तु गंगा के वेग को रोकने के लिए उन्हें शिव की कठोर तपस्या करनी पड़ी। तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने जटा में गंगा को बाँधने का वरदान दिया। इस कथा के आधार पर जो प्रतिमा निर्मित की जाती है, उसे गंगाधर प्रतिमा कहते हैं। इस प्रतिमा में शिव अपना दाहिना पैर सीधा व बाँया पैर कुछ मोड़कर रखे हुए प्रदर्शित किये जाते हैं, उनका अगला दाहिना हाथ पार्श्व में खड़ी उमा पर रहता है, अगले बाँये हाथ से वे पार्वती का आलिंगन करते हैं तथा पिछले बाँए हाथ में मृग रहता है। ऊपर वाले दाहिने हाथ से वे जटा पकड़े हुए दिखाये जाते है, जिस पर गंगा की आकृति होती हैं, बाँयी ओर खड़ी पार्वती के बाँये हाथ में पुष्प और दाहिना हाथ नीचे प्रसारित अथवा वस्त्र की चुन्नट पकड़े हुए प्रदर्शित होता है। बिहार के चाँदामऊ नामक स्थान से पाँचवीं शती० ई० की एक गंगाधर प्रतिमा प्राप्त हुई है।[12] जो इण्डियन म्यूजियम कलकत्ता में संग्रहीत है। गंगैकोण्डचोलपुरम के मंदिर में भी शिव की गंगाधर प्रतिमा का सुन्दर चित्रण किया गया है।[13] इसी प्रकार बारहवीं शती० ई० के चिदम्बरम् के नटराज मन्दिर से प्राप्त गंगाधर प्रतिमा[13] में शिव को खड़े हुए प्रदर्शित किया गया है, उनका दाहिना पैर सीधा और बाँया पैर घुटने से मुड़ा हुआ है। उनके बाँए पार्श्व में नारी रूप में द्विभुजी गंगा की आकृति प्रदर्शित है। शिव अपना दाहिना हाथ आगे कर गंगा के मुख के समीप रखे है और बाँया गंगा के अंधे पर स्थित है। प्रतिमा बड़ी संजीव और कलात्मक है, कांजीवरम् के कैलाश मंदिर से प्राप्त प्रतिमाएँ[14] भी द्रष्टव्य है।

6. रावणानुग्रह प्रतिमा

इस प्रतिमा से सम्बन्धित जो कथा है, वह इस प्रकार है, कुवेर पर विजय प्राप्त कर विजयोन्मादित रावण लंका लौट रहा था, जब मार्ग में उसका विमान रथ सरवण नामक स्थान पर पहुंचा तो उसने सर्वोन्नत शिखर पर एक मनोरम उद्यान देखा। वह वहाँ पर बिहार करने के लिए ललचा उठा, परन्तु ज्यों ही निकट पहुँचा तो उसका विमान अवरूद्ध हो गया वह वहीं रूक गया। यहाँ पर रावण को मर्कटानन वामन नन्दिकेश्वर मिले विमानावरोध का कारण पूछने पर नन्दिकेश्वर ने बतलाया कि इस समय महादेव (शिव) और उमा पर्वत पर विहार कर रहे हैं, और किसी को भी वहाँ से निकलने की अनुमति नहीं है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

यह सुनकर रावण स्वंय हँसा और महादेव की भी हँसी उड़ायी, इस पर नन्दिकेश्वर ने उसे यह श्राप दिया कि उसका मेरी ही आकृति एवं शक्ति वाले मर्कटों से नाश होगा। रावण क्रोधित होकर सम्पूर्ण पर्वत को ही उठाकर फेंकने का प्रयास करने लगा, जिसके फलस्वरूप पर्वत हिलने लगा और पार्वती लड़खड़ाकर एवं भयभीत होकर शिव के आलिंगन पाश में आ गयी। शिव ने क्रोधित होकर अपना पैर भूमि पर टिकाकर पूरे पर्वत को ही दबा दिया। जिसके परिणामस्वरूप पर्वत स्थिर हो गया रावण नीचे दब गया। पर्वत के नीचे दबा हुआ रावण रो–रोकर एक हजार वर्ष तक शिव की आराधना की (इसी कारण उसकी संज्ञा रावण 'रोने वाला' हुआ)। शिव ने अन्त में रावण पर अनुग्रह कर अपना पैर हटा लिया और उसे लंका जाने की अनुमति प्रदान की। इस कथा के आधार पर जो प्रतिमा निर्मित की जाती है। उसमें पर्वत पर स्थित शिव तथा सहमी हुई पार्वती को प्रदर्शित किया जाता है। पर्वत के नीचे दशानन (रावण) की आकृति बनायी जाती है। एलौरा के कैलाश मंदिर में रावणानुग्रह प्रतिमा का सुन्दर प्रदर्शन किया गया है। प्रतिमा में पर्वत को उठाते हुए रावण पर शिव की अनुकम्पा दिखाये जाते हुए प्रदर्शित किया गया है। पर्वत के ऊपर शिव पार्वती बैठे हैं रावण नीचे प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि शिव की सौम्य प्रतिमाएँ अनेक रूपों में निर्मित की गयी जिसकी सर्वांगीण व्याख्या पुराणों से भी प्रमाणित है और जनमानस में शिव का सौम्य रूप उसी प्रकार ग्रहय और श्रद्धेय है जिस प्रकार शिव की अन्य प्रतिमाएँ हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 04 April- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सन्दर्भ

1. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 465.
2. ऋग्वेद, 6/4/1, 4/12/16, 9/13/3
3. ऋ०वे० 7/46/3, 1/114/10, 1/114/1
4. ऋग्वेद 1/114/9
5. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ0–485
6. प्रतिमा विज्ञान, पृ0– 267
7. महा भा०, वन प०, 37, 20–66 भागवत पुराण में तो शिव को "किरातरूपिणं देव'' कहा गया है। (भा०पु०, 1०, 49, 45).
8. इलीमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, खण्ड 2, भाग 1, पृ० 278.
9. दी० चोलाज, पृ० 763.
10. रूद्रध्येयो भवाश्वै भवद्धयेयो हरस्तथा।
    युवयोरन्तरं नैव तव रूद्रस्य किंचन।।
    वस्रुश्वाप चैकत्व वरतोऽपि तथैव च।
    लोलयापि महाविष्णो सत्य सत्यं न सरायः।।
    (शि०पु० सृष्टि खण्ड)
11. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ० 463
12. तिवारी, एस०पी०, हिन्दू आइकनोग्राफी, चित्र 7
13. दि डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दूआइकोनोग्राफी, पृ0– 486
14. तिवारी, एस०पी०, हिन्दू आइकोनोग्राफी, चित्र 171
15. री०ए०, पल्लव आर्किटेक्चर
16. इलीमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी खण्ड 2, भाग 1, पृ0 276, डूविल आइकनोग्राफी ऑफ सर्दन इण्डिया, फलक 21